Govt. of India/भारत सरकार
Ministry of Earth Sciences/पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
India Meteorological Department/भारत मौसम विज्ञान विभाग
Meteorological Centre Lucknow/मौसम केन्द्र लखनऊ

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

उत्तर प्रदेश
संयुक्त कृषि-मौसम सलाहकार सेवा बुलेटिन

जारी दिनांक : 25.01.2024 **बुलेटिन सं. 08/24**

(दिनांक 25.01.2024 (भा.मा.स . 0830) से 29.01.2024 (भा.मा.स . 0830) तक)

उत्तर प्रदेश राज्य के नौ कृषि-जलवायु अंचल			
क्र.सं	*कृषि-जलवायु अंचल*	*ज़िले*	*एग्रोमेट फील्ड यूनिट (AMFU)*
1	*भावर-तराई क्षेत्र*	बहराईच, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, सहारनपुर, श्रावस्ती	*बहराइच, कानपुर, मेरठ (मोदीपुरम)*
2	*पश्चिमी मैदानी क्षेत्र*	शामली, मुज़फ्फरनगर, बागपत, मेरठ, गाजियाबाद, हापुड, गौतमबुद्धनगर, बुलन्दशहर।	*मेरठ (मोदीपुरम)*
3	*मध्य-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र*	अमरोहा (ज्योतिबा फुले नगर), संभल, बदायूँ, बरेली, शाहजहाँपुर, सीतापुर।	*मेरठ (मोदीपुरम), कानपुर*
4	*दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र*	अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, कांशीराम नगर (कांसगंज), एटा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, आगरा।	*मेरठ (मोदीपुरम), कानपुर*
5	*मध्य मैदानी क्षेत्र*	इटावा, फर्रुखाबाद, कन्नौज, हरदोई, औरैया, लखनऊ, कानपुर देहात, कानपुर नगर, उन्नाव, फतेहपुर, रायबरेली, कौशांबी।	*कानपुर, प्रयागराज, अयोध्या, मेरठ (मोदीपुरम)*
6	*बुन्देलखण्ड क्षेत्र*	झाँसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, ललितपुर ।	*झाँसी (भरारी), प्रयागराज*
7	*उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र*	गोरखपुर, गोंडा, बलरामपुर, बस्ती, संत कबीर नगर, कुशीनगर, देवरिया, सिद्धार्थनगर, महराजगंज।	*बहराइच,अयोध्या*
8	*पूर्वी मैदानी क्षेत्र*	बाराबंकी, अमेठी, अयोध्या, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, अम्बेडकर नगर, जौनपुर, आज़मगढ़, संत रविदास नगर (भदोही), मऊ, वाराणसी, ग़ाज़ीपुर, बलिया, चंदौली ।	*अयोध्या, प्रयागराज, वाराणसी।*
9	*विन्ध्य क्षेत्र*	प्रयागराज, मिर्ज़ापुर, सोनभद्र।	*प्रयागराज, वाराणसी।*

Govt. of India/भारत सरकार
Ministry of Earth Sciences/पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
India Meteorological Department/भारत मौसम विज्ञान विभाग
Meteorological Centre Lucknow/मौसम केन्द्र लखनऊ

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

भाग-I: मौसम

i. दिनांक 24.01.2024 से 25.01.2024 की अवधि के दौरान वास्तविक वर्षा

वर्षा (मिमी.) / मौसम उपप्रभाग	24.01.2024 से 25.01.2024 तक आवधिक वर्षा			संचयी शीत ऋतुकालीन वर्षा (01 से 25 जनवरी 2024 तक)		
	वास्तविक	सामान्य	% विचलन	वास्तविक	सामान्य	% विचलन
उत्तर प्रदेश	0.0	0.7	-100	2.4	9.6	-75
पूर्वी उत्तर प्रदेश	0.0	0.7	-100	3.4	9.4	-64
पश्चिमी उत्तर प्रदेश	0.0	0.8	-100	1.1	10	-89

24.01.2024 से 25.01.2024 तक आवधिक वर्षा विचलन (%)

शीत ऋतुकालीन (01.01.2024 से) वर्षा विचलन (%)

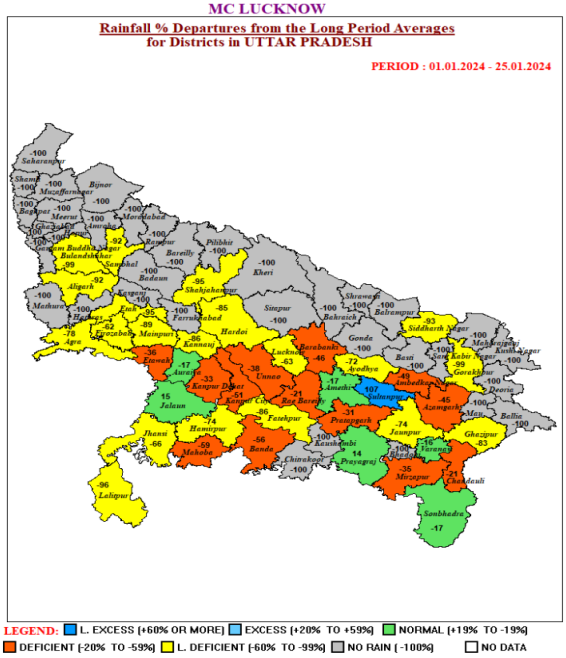

ii. जलवायु अंचलवार प्रमुख वर्षा मान दिनांक 24.01.2024 से 25.01.2024 तक

कृषि-जलवायु अंचल	प्रमुख वर्षा मान (सेमी. में)
भावर-तराई क्षेत्र	कुछ नहीं /
पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	कुछ नहीं /
मध्य-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	कुछ नहीं /
दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र	कुछ नहीं /
मध्य मैदानी क्षेत्र	कुछ नहीं /
बुन्देलखण्ड क्षेत्र	कुछ नहीं /
उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	कुछ नहीं /
पूर्वी मैदानी क्षेत्र	कुछ नहीं /
विन्ध्य क्षेत्र	कुछ नहीं /

Govt. of India/भारत सरकार
Ministry of Earth Sciences/पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
India Meteorological Department/भारत मौसम विज्ञान विभाग
Meteorological Centre Lucknow/मौसम केन्द्र लखनऊ

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

iii. कृषि-जलवायु अंचलवार मौसम दिनांक 23.01.2024 (भा.मा.स . 0830) से 25.01.2024 (भा.मा.स . 0830) तक

कृषि-जलवायु अंचल	औसत अधिकतम तापमान (°से.)		औसत न्यूनतम तापमान (°से.)		औसत सापेक्षिक आर्द्रता (%)		वायु गति एवं दिशा		बादल (ऑक्टा)
	वास्तविक	सामान्य	वास्तविक	सामान्य	वास्तविक	सामान्य	(किमी./घं)	दिशा	
भावर-तराई क्षेत्र	13.8	20.5	5.7	7.5	87	75	02-04	उ.प.	02-04
पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	13.8	19.9	5.2	6.8	88	73	00-02	उ.पू- द.	02-06
मध्य-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	14.2	20.6	5.9	7.7	86	75	00-02	द.-प.	अस्पष्ट
दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र	14.6	21.1	6.8	7.3	89	72	02-04	उ.प.	अस्पष्ट
मध्य मैदानी क्षेत्र	16.0	21.6	5.9	7.8	87	71	02-04	प.	कुछ नहीं
बुन्देलखण्ड क्षेत्र	16.4	21.6	6.6	7.9	87	71	00-02	उ.पू- द.पू.	कुछ नहीं
उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	15.7	21.8	6.6	8.6	85	74	00-02	द. प.-प.	अस्पष्ट
पूर्वी मैदानी क्षेत्र	15.4	21.9	6.6	8.2	88	75	02-04	द.प.- उ.प.	अस्पष्ट
विन्ध्य क्षेत्र	17.3	22.5	5.9	8.5	88	68	00-02	उ.पू- उ.प.	अस्पष्ट

औसत अधिकतम तापमान
23.01.2024 (0830 IST) से 25.01.2024 (भा.मा.स . 0830) तक

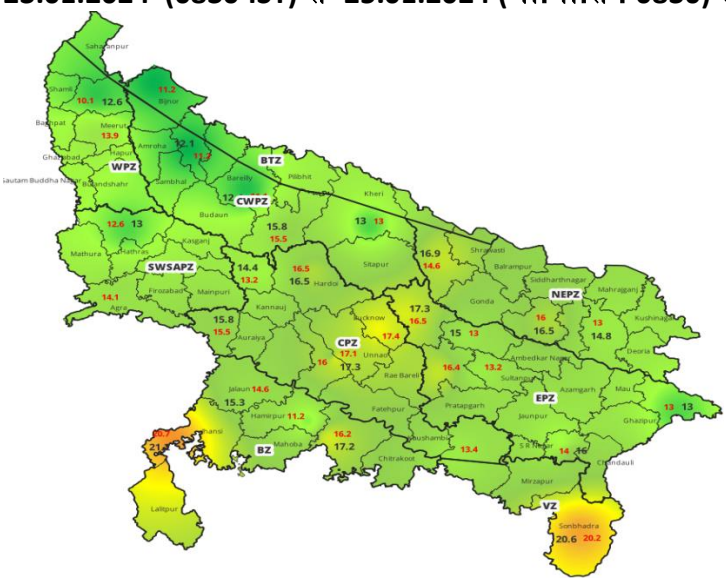

औसत न्यूनतम तापमान
23.01.2024 (0830 IST) से 25.01.2024 (0830 IST) तक

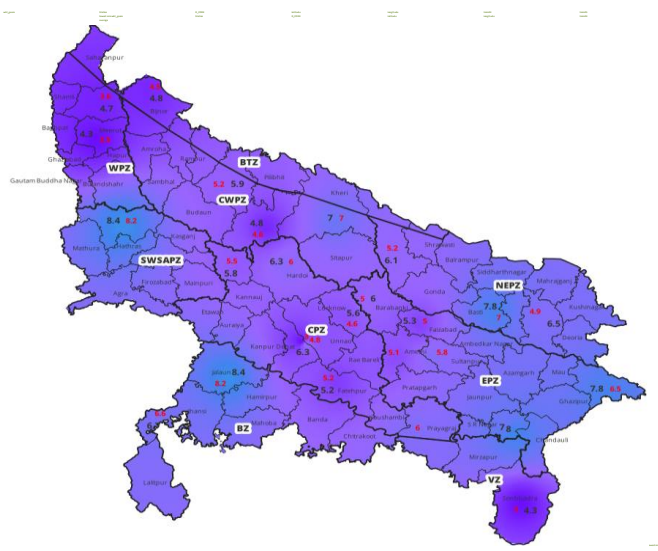

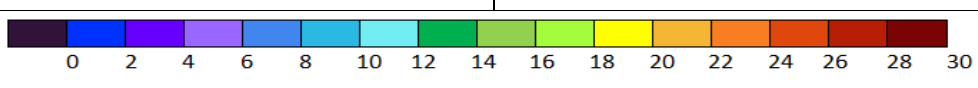

- लाल रंग से प्रदर्शित संख्या उस वेधशाला पर सबसे कम अधिकतम / न्यूनतम तापमान को प्रदर्शित करती है |
- काले रंग से प्रदर्शित संख्या उस वेधशाला पर औसत अधिकतम / न्यूनतम तापमान को प्रदर्शित करती है |

Govt. of India/भारत सरकार
Ministry of Earth Sciences/पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
India Meteorological Department/भारत मौसम विज्ञान विभाग
Meteorological Centre Lucknow/मौसम केन्द्र लखनऊ

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

iv. कृषि-जलवायु अंचलवार मौसम पूर्वानुमान दिनांक 25.01.2024 से 29.01.2024 तक

कृषि-जलवायु अंचल	वर्षा (मिमी.)					अधिकतम तापमान (°से.)		न्यूनतम तापमान (°से.)		सापेक्षिक आर्द्रता (%)		वायु गति एवं दिशा		बादल (ऑक्टा)	मौसम चेतावनी				
	D_1	D_2	D_3	D_4	D_5	वास्तविक	सामान्य	वास्तविक	सामान्य	वास्तविक	सामान्य	(किमी./घं)	दिशा		D_1	D_2	D_3	D_4	D_5
भावर-तराई क्षेत्र	D	D	D	D	D	14-18	22	04-08	9	55-96	73	04-08	उ.पू- उ.प.	0-4					
पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	D	D	D	D	D	14-18	21	04-08	8	55-94	72	02-10	उ.पू- उ.प.	0-4					NIL
मध्य-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	D	D	D	D	D	14-16	22	04-07	9	60-95	74	05-10	उ.पू- उ.प.	0-4					NIL
दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र	D	D	D	D	D	15-20	23	06-08	8	60-95	72	04-08	उ.पू- उ.प.	0-6					
मध्य मैदानी क्षेत्र	D	D	D	D	D	16-22	23	04-07	9	53-96	71	04-08	उ.पू- उ.प.	0-6					
बुन्देलखण्ड क्षेत्र	D	D	D	D	D	19-25	23	04-08	9	50-94	69	04-08	उ.पू- उ.प.	0-6					
उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	D	D	D	D	D	15-17	23	05-08	10	60-98	75	05-08	उ.पू- उ.प.	0-4				NIL	NIL
पूर्वी मैदानी क्षेत्र	D	D	D	D	D	16-20	23	05-08	9	50-98	74	04-08	उ.पू- उ.प.	0-4				NIL	NIL
विन्ध्य क्षेत्र	D	D	D	D	D	20-24	24	04-08	10	50-95	68	05-08	उ.पू- प.	0-4				NIL	NIL

प्रतीक चिह्न	संबद्ध मौसम	प्रतीक चिह्न	संबद्ध मौसम	प्रतीक चिह्न	संबद्ध मौसम
	कोहरा		तड़ित झंझावात/ वज्रपात		हल्की से मध्यम वर्षा
	शीत लहर		तूफ़ान/ चंडवात		भारी वर्षा
	शीत दिवस		ओलावृष्टि		भारी से बहुत भारी वर्षा
	पाला		बहुत हल्की से हल्की वर्षा		अत्यधिक भारी वर्षा

वर्षा की तीव्रता (Rainfall Intensity)		आसमान की स्थिति (Sky Condition)		कोहरे की तीव्रता (Fog Intensity)	
शब्दावली	वर्षमान (मिमी. में)	शब्दावली	बादल की मात्रा (ऑक्टा में)	शब्दावली	दृश्यता (मीटर में)
बहुत हल्की वर्षा	Trace – 2.4	आसमान साफ़	0	धुंध	>1000 (सापेक्षिक आर्द्रता<75%)
हल्की वर्षा	2.5 – 15.5	आसमान मुख्यतया साफ़	1-2	कुहासा	>1000 (सापेक्षिक आर्द्रता>75%)
मध्यम वर्षा	15.6 – 64.4	आसमान में आंशिक बादल	3-4	छिछला कोहरा	<1000
भारी वर्षा	64.5 – 115.5	आसमान में आमतौर पर बादल	6-7	मध्यम कोहरा	<500
बहुत भारी वर्षा	115.6 – 204.4	बादलों से पूरा घिरा आसमान	8	घना कोहरा	<200
अत्यधिक भारी वर्षा	>204.5	अस्पष्ट/धुंधला आसमान	-	अत्यधिक घना कोहरा	<50

क्षेत्रीय वितरण (% of stations reporting)		संभावित पूर्वानुमान (Probabilistic Forecast)		रंग आधरित चेतावनी /सलाह	
% स्टेशन	विवरण	शब्दावली	सम्भाव्यता	रंग	चेतावनी /सलाह
76-100	लगभग सभी स्थानों पर	मामूली सम्भावना	<25%	हरा (कोई चेतावनी नहीं)	कोई कार्यवाही नहीं
51-75	अनेक स्थानों पर	सम्भावना है	25%-50%	पीला	सचेत रहें
26-50	कुछ स्थानों पर	बहुत सम्भावना	51%-75%	नारंगी	तैयार रहें
<25	कहीं- कहीं (एक या दो स्थानों पर)	अत्यधिक सम्भावना	>75%	लाल	कार्यवाही करें

भाग-II: जनपदीय /क्षेत्रीय कृषि-मौसम सलाह

फसल	फसल अवस्था	I) नोडल अधिकारी इलाहाबाद- जिले फतेहपुर, प्रतापगढ़, इलाहाबाद, चित्रकूटनगर, कौशाम्बी।
रबी फसल	सामान्य	**सरसों:** समय पर बोई गई सरसों की फसल में नाइट्रोजन की शेष मात्रा की टॉप ड्रेसिंग पहली सिंचाई (बुवाई के 30-35 दिन बाद) उपयुक्त नमी पर और दूसरी सिंचाई बुआई के 55-65 दिन बाद फूल आने से पहले करें। फसल में आरा मक्खी एवं रोयेंदार सुंडी का प्रकोप होने की संभावना रहती है अत: इसकी रोकथाम के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5% एसजी @ 200 ग्राम/हेक्टेयर 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
	कल्ले निकलना	**गेहूं:-** गेहूं में बुआई के हल्की सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। विशेषकर बंजर भूमि (क्राउन अवस्था में) दिन बाद 25-20 45-40 में बुआई केदिन बाद कल्ले निकलने की अवस्था पर दूसरी सिंचाई करें। सिंचाई शाम के समय ही करनी चाहिए। जई आने पर दूसरी सिंचाई के बाद एक तिहाई मात्रा की टॉप ड्रेसिंग करें।
	फली विकास	**मटर के खेत:-** मटर में अल्टरनेरिया, पत्ती धब्बा एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3 किग्रा. मात्रा प्रति हे. लगभग 500-600 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
	सामान्य	**चना:-** किसानों को चने की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं छिड़काव कार्य करने का सुझाव दिया जाता है। साथ ही चने में आवश्यकतानुसार पहली सिंचाई बुआई के करनी चाहिए तथा (फूल आने से पहले) दिन बाद 60 से 45 दूसरी सिंचाई फली में दाने बनने के समय करनी चाहिएतथा फूल आने के समय कभी भी सिंचाई नहीं करनी चाहिए।
गन्ना	सामान्य	शरद ऋतु में बोये गये गन्ने में हल्की सिंचाई करके निराईगुड़ाई करनी चाहिए।-
सब्जी	सामान्य	**प्याज:-** प्याज की नर्सरी में गीला सड़न रोग से बचाव के लिए कार्बेंडाजिम प्रतिशत का छिड़काव करें 0.1तथा ठंड एवं पाले से बचाव के लिए लो टनल का प्रयोग करें। **आलू:-** किसानों को सुझाव है कि आलू की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं छिड़काव का कार्य करें। यदि आलू की फसल में झुलसा रोग के लक्षण दिखाई दें तो इस रोग से बचाव के लिए साइमोएलेक्सिनिल एवं मैंकोजेब मिश्रित दवा वे सभी किसान जिनके आलू के खेतों में झुलसा रोग नहीं है .ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें 2.5, उन्हें सलाह दी जाती है कि मैंकोजेब युक्त फफूंदनाशी की ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। 2
फल	सामान्य	**केला:-** यदि केले के पत्तों पर काले धब्बे और सड़न की समस्या हो तो 1.0 ग्राम कार्बन्डाजिम प्रति लीटर की दर से डालें। इसे पानी में मिलाकर छिड़काव करें और अवांछित फूलों की कटाई करें।
गाय	सामान्य	**भैंस/गाय-** किसानों को सलाह दी जाती है कि वे रात में जानवरों को खुले में न रखें और उन्हें गर्म कपड़ों से ढककर रखें। गुड़ और सरसों की खली का मिश्रण भी खिलाएं.

फसल	अवस्था	I) **नोडल अधिकारी बहराईच- जिले बहराईच, श्रावस्ती, बलरामपुर, गोंडा, कुशीनगर, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज ।**
रबी फसल	सामान्य	**सरसों:-** सरसों की फसल में एफिड संक्रमण के लिए निगरानी की सलाह दी जाती है। एफिड के शिशु और वयस्क दोनों ही पत्तियों, तनों, पुष्पक्रम या विकसित हो रही फलियों से कोशिकारस चूसते हैं। कीट की संख्या -बहुत अधिक होने के कारण पौधों की जीवन शक्ति बहुत कम हो जाती है। पत्तियाँ घुंघराले दिखने लगती हैं, फूल फलियाँ बनाने में विफल हो जाते हैं और विकसित होने वाली फलियाँ स्वस्थ बीज पैदा नहीं कर पाती हैं। **गेहूं:-** देर से बोई गई 21 से 25 दिन की गेहूं की फसल में 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से डालना चाहिए. गेहूं की बुआई के 30 से 35 दिन बाद की अवस्था (पहली सिंचाई के बाद) जिसमें गेहूं की फसल में कई प्रकार के खरपतवार उग आते हैं। ये खरपतवार बहुत तेजी से बढ़ते हैं और गेहूं की वृद्धि को प्रभावित करते हैं। जिससे पैदावार प्रभावित होती है. इन सभी प्रकार के खरपतवारों पर नियंत्रण के लिए सल्फोसल्फ्यूरॉन 33 ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा मेटासल्फ्यूरॉन 20 ग्राम प्रति हेक्टेयर को 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल पर छिड़काव करें। **मक्का:-** रबी मक्का की अगेती फसलों की छँटाई करें और कीटों और बीमारियों के लिए नियमित रूप से फसल की निगरानी करें। **तोरिया:-** तोरिया की फसल की बुआई के 20-22 दिन के अन्दर निराई-गुड़ाई करने के साथ-साथ पौधे से पौधे की दूरी 10 -15 सेमी कर दें। तोरिया की फसल में आरा मक्खी एवं बालदार कीट का प्रकोप होने की संभावना रहती है अत: इसकी रोकथाम के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5% एसजी 200 ग्राम/हेक्टेयर की दर से या क्विनालफॉस 25 ईसी 1.25 लीटर/हेक्टेयर की दर से 500-600 में प्रयोग करें। लीटर पानी. इसका घोल बनाकर छिड़काव करें।
सब्जी	सामान्य	**आलू:-** बाद में बोई गई आलू की फसल से खरपतवार निकालें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। आलू के झुलसा रोग की नियमित निगरानी करें। **प्याज:-** रबी प्याज की रोपाई प्राथमिकता से करें। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 सेमी और पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखें। पौधे को अधिक गहराई में न लगाएं। जल्दी लगाए गए प्याज की छँटाई करें। लहसुन की फसल में झुलसा रोग और कीट रोगों की निगरानी करें। **सब्जी मटर:-** मटर की फसल में ख़स्ता फफूंदी रोग की निगरानी करें, जिसमें पत्तियों, फलों और तनों पर सफेद पाउडर दिखाई देता है। इस रोग की रोकथाम के लिए फसल पर कैराथेन दवा 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी या सल्फेक्स दवा 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। **टमाटर:-** टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट का प्यूपा टमाटर को बहुत नुकसान पहुंचाता है. ये कच्चे और पके टमाटरों में छेद करके उनके अंदर घुस जाते हैं और उन्हें खा जाते हैं। कीड़ों के मल-मूत्र के कारण फलों में सड़न उत्पन्न होने लगती है जिससे उत्पादन में काफी कमी आ जाती है। इस कीट से बचाव के लिए खेत में प्रति हेक्टेयर 8-10 फेरोमोन टैम्प्स लगाएं. ब्यूवेरिया बैसियाना जैविक कीटनाशक का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। यदि कीटों की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसैड 48 ईसी/1 मिली प्रति 4 लीटर पानी या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी/1 मिली प्रति 2.5 लीटर पानी का घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
फल	सामान्य	**पपीता:-** पपीते की नर्सरी उथली क्यारियों (10-15 सेमी ऊँची) में बोई जाती है। इसके लिए उन्नत उपभेद हैं पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, सीओ-07, सूर्या और रेड लेडी। बीज दर 300-350 ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें. बीज को कोबाविस्टीन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करें।
भैंस/ गाय	सामान्य	**भैंस/गाय-** किसानों को सलाह दी जाती है कि वे जानवरों को साफ जगह पर रखें और मक्खियों और मच्छरों से बचाव के लिए जानवरों को धुआं दें। गौशाला को कीचड़ और नमी से मुक्त रखें और भैंसों को मच्छरों और मक्खियों से बचाने के लिए मक्खी निरोधक का प्रयोग करें।

फसल	फसल अवस्था	I) **नोडल अधिकारी भरारी :- जिले जालौन, ललितपुर, झांसी, बाँदा, महोबा व हमीरपुर**
रबी फसल	सामान्य	**गेहूं (पैनिकल इनीशिएशन):-** गेहूं की फसल के खेत में चूहों के नियंत्रण के लिए जिंक फास्फाइड या एल्युमीनियम फास्फाइड का प्रयोग करना चाहिए। देर से बोई गई गेहूं की फसल में पहली सिंचाई 18-20 दिन पर करनी चाहिए। समय से बोई गई गेहूं की फसल में दूसरी सिंचाई बुआई के 50-55 दिन बाद करनी चाहिए।
	वनस्पतिक	**चना:-** फसल में पर्याप्त नमीं बनाए रखें| सरसों एवं मसूर की फसल में माहू के प्रकोप की संभावना है, माहू कीट दिखाई देने पर निम्नलिखित कीटनाशकों में से किसी एक का छिड़काव करें; इमामेक्टिन बेंजोएट @ 0.2 ग्राम, इमिडाक्लोप्रिड 17.8% @ 0.25 मिली, थियामेथोक्साम 25 डब्ल्यूजी @ 0.2 ग्राम, डाइमेथोएट 30 ईसी @ 1 मिली प्रति लीटर पानी। यदि चने के खेत में चिड़िया बैठी हो तो समझ लें कि खेत में इल्ली का प्रकोप है। चने की फसल में इल्ली के नियंत्रण के लिए फेरोमोन जाल प्रति एकड़ 3-4 जाल लगाने की सलाह दी जाती है। कीटों की आबादी को नियंत्रित करने के लिए फसल के खेत और उसके आसपास "टी" आकार के पक्षियों के बैठने की व्यवस्था की जानी चाहिए। चने की फसल में इल्ली के नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस 25 ईसी 1.0 लीटर या इमामेक्टिन बेंजोएट 200 ग्राम/हेक्टेयर 500-600 लीटर पानी के साथ मिलाना चाहिए।
	पुष्प प्रारम्भ	**सरसों**मौसम की स्थिति को देखते हुए सरसों एवं मसूर की फसल में माहू के प्रकोप की संभावना अधिक है -:, माहू कीट दिखाई देने पर निम्नलिखित में से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें; इमामेक्टिन बेंजोएट @ ग्राम 0.2, इमिडाक्लोप्रिड %17.8@ मिली 0.25, थियामेथोक्साम डब्ल्यूजी 25@ ग्राम 0.2, डाइमेथोएट ईसी 30@ मिली प्रति 1 लीटर पानी।
सब्जी	बुवाई	**लौकी** -:कद्दू वर्गीय सब्जियों की अगेती बुआई के लिए बीजों को छोटी पॉलिथीन की थैली में भरकर पॉली हाउस में रखना चाहिए। गोभी वर्ग की सब्जियों में सिंचाई, निराईगुड़ाई एवं भूमि रोपण का यह उपयुक्त समय है।-
	रोपाई	**प्याज:-** रबी प्याज की रोपाई का यह सबसे अच्छा समय है। .
		मशरूम:- यह ऑयस्टर मशरूम के उत्पादन का उपयुक्त समय है जो किसानों के लिए लाभदायक स्रोत है। अतः किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कम खर्च में मशरूम का उत्पादन कर अधिक आय अर्जित कर सकते हैं।
	सामान्य	**आम**:- फलदार वृक्षों के बगीचे में सिंचाई एवं खाद देना चाहिए। प्रत्येक पौधे और बगीचे के पौधों को हर साल 10 किलोग्राम कम्पोस्ट/खाद, 100 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फेट और 75 ग्राम पोटेशियम देना चाहिए।
गाय	सामान्य	**गाय :-** मौसम पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सलाह दी जाती है कि पशुओं को पाले से बचाने के लिए पशुशाला तैयार रखें, पशुओं के नीचे बिस्तर का प्रयोग करें तथा बिस्तर गीला होने पर बदलते रहें। पशुओं को नियमित रूप से खिलाने में बरसीम और जई की सलाह दी जाती है। दुधारू पशुओं के लिए प्रति 2 लीटर दूध की मात्रा के हिसाब से 1 किलो चारा + 50 ग्राम खनिज मिश्रण नियमित रूप से खिलाने का कार्यक्रम अपनाएं। पशुओं को 50-60 ग्राम नमक पानी में मिलाकर अवश्य पिलाना चाहिए |

फसल	फसल अवस्था	I) **नोडल अधिकारी फ़ैजाबाद :- जिले बाराबंकी, रायबरेली, सुल्तानपुर, गोरखपुर, फ़ैजाबाद, बस्ती अम्बेडकर नगर, संतकबीरनगर, देवरिया व बलिया।**
रबी फसल	टिलरिंग	**गेहूं:-** संकरी एवं चौड़ी पत्ती वाले दोनों तरह के खरपतवारों के एक साथ नियंत्रण के लिए पेंडीमेथालिन 30 प्रतिशत ईसी का प्रयोग करें। बुआई के 03 दिन के अन्दर 3.30 लीटर की अनुशंसित मात्रा लगभग 300 लीटर होती है। पानी में घुल गया. फ़्लैट फेनाज़िल या मेट्राबुगिन 70 प्रतिशत WP का छिड़काव करें। 250 ग्राम का. बुआई के 20 से 25 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 500 से 600 लीटर पानी में मिला दें. फ्लैट फैन स्प्रे से स्प्रे करें।
	अंकुरण	**सरसों:-** देर से बोई गई सरसों की फसल में निराई-गुड़ाई की सलाह दी जाती है। यदि कम तापमान दो सप्ताह तक जारी रहता है, तो सफेद रतुआ का संक्रमण शुरू हो सकता है। इसलिए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पत्तियों पर सफेद रतुआ की उपस्थिति का निरीक्षण करते रहें।
	फूल आना	**चना:-** चने में पहली सिंचाई आवश्यकतानुसार बुआई के 45 से 60 दिन बाद (फूल आने से पहले) तथा दूसरी सिंचाई फलियों में दाना बनने के समय करनी चाहिए। फूल आने के समय कभी भी सिंचाई न करें।
		तोरिया:- तोरिया में 75% फलियाँ सुनहरी दिखाई देने पर फसल की कटाई करें। देर से बोई गई तोरिया की फसल फूल से फली बनने की अवस्था में चल रही है, जो नमी की कमी के प्रति संवेदनशील है, इसलिए हल्की सिंचाई करके उचित नमी बनाए रखें।
सब्जी	सामान्य/बुवाई	**गाजर:-** एशियाई गाजर और मूली के बीज उत्पादन के लिए स्टेकलिंग के बाद रोपाई करें।
		प्याजः- प्याज की रोपाई इसी सप्ताह में कर लेनी चाहिए. किसानों को सलाह दी जाती है कि वे रोपाई से पहले खेतों में पूरी तरह से विघटित FYM और पोटाश उर्वरक का उपयोग करें। यदि पिछले माह प्याज के बीज नर्सरी में नहीं बो सके हों तो इस माह अवश्य बोयें।
		उद्यान मटर:- मटर की फसल में बुकनी रोग के लक्षणों को नियंत्रित करने के लिए घुलनशील सल्फर 80 प्रतिशत 2 किग्रा. या ट्राइडेमेफोन 25 प्रतिशत डब्लू.पी. 250 ग्राम प्रति हेक्टेयर. लगभग 500 से 600 मिलीलीटर पानी मिलाकर छिड़काव करें।
	फल की परिपक्वता	**आलू :-** सापेक्षिक आर्द्रता अधिक होने के कारण आलू एवं टमाटर में झुलसा रोग का संक्रमण हो सकता है। किसानों को सलाह है कि दोनों फसलों में निरंतर निगरानी करते रहें। यदि लक्षण दिखाई दें तो डाइथेन-एम-45 @ 2.0 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।
		लहसुनः- मिट्टी डालते समय टॉपड्रेसिंग करें। गन्ने के साथ लहसुन की सहफसली खेती 20 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से करें।
	फूल	**बैंगन:-** बैंगन को फोमोप्सिस से तथा आलू को पछेती झुलसा रोग से बचाने के लिए उचित फफूंदनाशी का छिड़काव करें।
फल	सामान्य	जो किसान नए बाग (आम, नींबू और अमरूद) लगाना चाहते हैं, उन्हें मान्यता प्राप्त स्रोतों से पौधों की रोपाई करने की सलाह दी जाती है। पहले लगाए गए नए बगीचों में उन पौधों के स्थान पर नए पौधे लगाएं जो किसी कारणवश मर गए हों ।
भैस	सामान्य	गांठदार त्वचा रोग एक वायरल बीमारी है, जिसकी रोकथाम के लिए पशुपालन विभाग द्वारा टीकाकरण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। सभी किसान अपने नजदीकी पशु चिकित्सालय से संपर्क कर इसकी रोकथाम के उपाय एवं टीकाकरण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

Govt. of India/भारत सरकार
Ministry of Earth Sciences/पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
India Meteorological Department/भारत मौसम विज्ञान विभाग
Meteorological Centre Lucknow/मौसम केन्द्र लखनऊ

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

फसल	फसल (अवस्था)	I) **नोडल अधिकारी कानपुर :- जिले कन्नौज, हाथरस, मथुरा, आगरा, एटा, मैनपुरी, फिरोजाबाद, इटावा, औरैया, कानपुर शहर, उन्नाव, लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, बाराबंकी, खीरी-लखीमपुर, काशीरामनगर |**
रबी फसल	बूटिंग	**गेहूं:-** गेहूं की फसल में दूसरी सिंचाई बुआई के दिन 45-40बाद कल्ले फूटने की अवस्था पर तथा तीसरी सिंचाई बुआई के दिन बाद फूटने की अवस्था पर करें। हल्की सिंचाई एवं नाइट्रोजन अवश्य करें। जई 65-60 आने पर दूसरी सिंचाई के बाद एक तिहाई मात्रा की टॉपड्रेसिंग करें।
	पुष्प प्रारम्भ	**सरसों:-** सरसों की फसल में दूसरी सिंचाई बुआई के 55-65 दिन बाद फूल आने से पहले करनी चाहिए। आसमान में लगातार बादल छाए रहने के कारण सरसों की फसल में माहू कीट लगने की संभावना बढ़ जाती है, अत: इसकी रोकथाम करें। क्लोरपायरीफॉस 20% ईसी. 1.0 लीटर/हेक्टेयर या मोनोक्रोटोफॉस 36% एसएल का उपयोग. 500 मिली/हेक्टेयर 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें |
	फली विकास	**मटर की फसल:-** मटर की फसल में नमी की अधिकता के कारण पत्तियों, तनों और फलियों पर सफेद पाउडर की तरह फैलने वाले डुकल रोग की रोकथाम के लिए घुलनशील सल्फर 80% 2 किलोग्राम या ट्राइडेमोर्फ 80% EC 50 मिली/हेक्टेयर की दर से 500- 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
	पुष्प प्रारम्भ	**चना:-** चने की फसल में फूल आने से पहले सिंचाई अवश्य करें। समय पर बोई गई चने की फसल में तुड़ाई बंद करें। चने की फसल में कटवर्म रहती है का प्रकोप होने की संभावना (कैटरपिलर कीट), इसकी रोकथाम के लिए क्लोरपाइरीफोस %50EC + स्पर्मेथ्रिन %5EC लीटर पानी में 600-500 हेक्टेयर की दर से/लीटर 2.0 घोलकर छिड़क ाव करें। चने की फसल में निराईदिन बाद करनी चाहिए 35-30 गुड़ाई बुआई के-
सब्जी	सामान्य	**आलू (वानस्पतिक):-** आलू की फसल में पिछेती झुलसा रोग का प्रकोप होने की संभावना है, अतइसकी रोकथाम के : 2.0) लिए साफ मौसम में मैंकोजेबग्राम %0.2 या (लीटर पानी/डाइथेन एम 1.5) 45-मिलीके घोल का (लीटर पानी/ 4-3 दिन के अंतराल पर 12-10 छिड़काव करें। कई दिनों तक मौसम में नमी और बादल छाए रहें तो आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।
	फल निर्माण	**टमाटर:-** टमाटर की फसल में पिछेती झुलसा एवं जीवाणु बिल्ट रोग के प्रकोप की स्थिति में 10 लीटर पानी में 30 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड एवं 1 ग्राम स्ट्रेप्टोमाइसिन का मिश्रण बनाकर छिड़काव करें। यदि सब्जी की फसलों में फल छेदक/पत्ती छेदक कीट का प्रकोप दिखाई दे तो इसके नियंत्रण के लिए नीम के तेल को 1.5 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर 8-10 दिन के अंतराल पर 3-4 छिड़काव करें।
	प्रत्यारोपण	**प्याज (नर्सरी सीडलिंग):-** प्याज की तैयार पौध की रोपाई करेंप्याज की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के . तुरंत बाद या सिंचाई से ठीक पहलेस्टाम्प 3.5 (पेन्डीमेथालिन)लीटरलीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव 800 हेक्टेयर/ रोग देखने को मिलता है (आर्द्र सड़न) करें। प्याज की नर्सरी में डैम्पिंग ऑफ, इसकी रोकथाम के लिए साफ मौसम में थायरम लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर/ग्राम 2.5 ग्राम या मैकोजेब 2.5ें।
बागवानी	फल निर्माण	**केला -:**केलेमीटर ऊंची मिट्टी का स्टैंड बना लें। केले की फसल 30-25 पपीते की थैलियों को मोड़कर तने के चारों ओर/ से बचाने के लिए केले के खेतों में सिंचाई कर पर्याप्त मात्रा में नमी बनाए रखें। केले की फसल को (शीत लहर) को पाले शीत) पाले लहर %0.2 से बचाने के लिए साफ मौसम में (डाइथेन एम 2.5) 45-ग्राम+ %4 या हेक्साकोनाजोल (लीटर पानी/ झाये नेब 15/ग्राम 60 डब्लूपी 68लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।
गाय / भैस	सामान्य	**भैंस:-** वर्तमान मौसम को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुबह और शाम को झुलाएं, रात के समय अपने पशुओं को खुले में रखें और रात के समय खिड़कियों और दरवाजों पर जूट के बोरे के पर्दे लगाएं और हटा दें। दिन के समय पर्दों को धूप में रखें। पशुओं को हरा व सूखा चारा पर्याप्त मात्रा में दाना दें। पशुओं को दिन में 3-4 बार ताजा एवं ताजा पानी अवश्य पिलाना चाहिए। पशुओं को साफ-सुथरी जगह पर रखें। **मुर्गी:-** किसानों को सलाह दी जाती है कि वे मुर्गियों को दिन में 15 से 16 घंटे रोशनी दें। मुर्गियाँ भोजन की पूर्ति करती हैं, अपने आहार में विटामिन और ऊर्जा खाद्य सामग्री के साथ-साथ मुर्गियों को कैल्शियम की मात्रा भी मिलाती हैं। मुर्गियों को ठंड से बचाने के लिए पर्याप्त गर्मी की व्यवस्था करें।

Govt. of India/भारत सरकार
Ministry of Earth Sciences/पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
India Meteorological Department/भारत मौसम विज्ञान विभाग
Meteorological Centre Lucknow/मौसम केन्द्र लखनऊ

Years of Service to the Nation
राष्ट्र सेवा के 150 वर्ष

फसल	फसल अवस्था	II) नोडल अधिकारी मोदीपुरम:-**जिले मेरठ, पीलीभीत, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बागपत, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, अलीगढ, बुलंदशहर, मुरादाबाद, ज्योर्तिबाफुलेनगर, बिजनौर बदायूं, बरेली, रामपुर, शाहजहांपुर, फर्रुखाबाद ,शामली, सम्भल, हापुड़ |**
रबी फसल	वनस्पतिक	**गेहूं:-** गेहूं में हल्की सिंचाई करें गेहूं की बुआई के 20-25 दिन पर पहली सिंचाई 5-6 सेमी तथा दूसरी सिंचाई 40 से 45 दिन पर कल्ले निकलने के समय करें। समतल सिंचाई से पहले या सिंचाई के 4-6 दिन बाद नाइट्रोजन की शीर्ष ड्रेसिंग करें। इसमें देरी न करें. गेहूं में 40 किलोग्राम नाइट्रोजन की दूसरी टॉप ड्रेसिंग करें।
	फली विकास	**सरसों:-** फसलों को शीत लहर/पाले से बचाने के लिए हल्की सिंचाई करें और खेत को खरपतवार मुक्त रखें| सरसों में दाना भरने की स्थिति में दूसरी सिंचाई करें। माहू कीट पत्ती, तना, फली सहित संपूर्ण पौधों से रस चूसता है तथा थायमेथोगामम 25 डब्ल्यूडी 125 ग्राम को 800 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर मिलाकर छिड़काव करें। उपरोक्त बीमारियों या माहों के प्रकोप की स्थिति में फफूंदनाशकों या कीटनाशकों में से किसी एक को एक साथ मिलाकर प्रयोग करें।
गन्ना	सामान्य	गन्ने की सिंचाई आवश्यकतानुसार करें। गन्ने को विभिन्न प्रकार के तना छेदक कीड़ों से बचाने के लिए प्रति हेक्टेयर 25 किलोग्राम कर्टेप 4 जी का प्रयोग करें। गन्ने के जिन खेतों में पीडी रखनी है, वहां या तो गन्ने की 5 सेमी मोटी सूखी पत्तियां बिछा दें या कटाई के बाद खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई-गुड़ाई कर सिंचाई करें |
सब्जी	सामान्य	**लहसुन -:**लहसुन में नाइट्रोजन की दूसरी टॉप ड्रेसिंग के लिए बुआई के प्रति हेक्टेयर .किग्रा 74 दिन बाद 60-50की दर से यूरिया का छिड़काव करें|
		पालक -:पालक, मेथी और धनिये की पत्तियों को काट कर बाजार में भेज दीजिये| प्रत्येक कटाई के दिन बाद 20-17 यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें। यदि आप उनसे बीज लेना चाहते हैं तो पत्तियां .ग्रा.कि 10 तथा मेथी में .ग्रा.कि 20 पालक में हेक्टेयर यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें।/किलोग्राम 25 काटना बंद कर दें और
		आंवला :-आँवले में नरम सड़न अधिकतर दिसम्बर से फरवरी के बीच देखी जा सकती है। संक्रमित भाग पर पानी से गीला भूरा धब्बा बन जाता है, जो लगभग दिनों में पूरे फल को ढक देता है और फल का आकार बिगाड़ देता है। यह रोग 8 नये और परिपक्व दोनों प्रकार के फलों को प्रभावित करता है, लेकिन परिपक्व फलों में इसका प्रकोप अधिक होता है। फलों की कटाई के बाद उन्हें डाइफोलेटियन 0.15)प्रतिशत(, डाइथेन एम 45-या बाविस्टिन 0.1)प्रतिशतसे उपचारित करके (भंडारण करने से इस रोग की रोकथाम की जा सकती है।
		आलू -:आलू की फसल में पौधों के ऊपरी भाग को जनवरी के प्रथम सप्ताह तक काट लें, इसके बाद आलू को 25-20 20 .दिन तक जमीन के अंदर पड़ा रहने दें। ऐसा करने से आलू का छिलका सख्त हो जाएगा और खराब नहीं होगासे 25 जनवरी से पहले कर खेत 15 दिन बाद खोदकर साफ कंद चुन लें। आलू बीज उत्पादक फसल के लिए पत्तियों की कटाई के बाहर गड्ढा कर देना चाहिए| फसलों को शीत लहर/पाले से बचाने के लिए हल्की सिंचाई करें और खेत को खरपतवार मुक्त रखें|
भैंस/गाय	सामान्य	**गाय एवं भैंस:-** पशुओं को पेट के कीड़े मारने की दवा दें। पशुओं को बारिश से बचाने के लिए उचित प्रबंधन करें। पशुओं को साफ-सुथरा रखें और उन्हें मक्खी-मच्छरों से बचाएं। पशुओं को खुले में न बांधें क्योंकि आकाशीय बिजली गिरने से पशुओं को शारीरिक नुकसान हो सकता है। पशुओं को ऊंचे स्थान पर बांधें। खुरपका और मुंहपका रोग से बचाव के लिए टीका लगवाएं। इस रोग से पीड़ित पशुओं के घावों को पोटैशियम परमैंगनेट से धोएं। दोनों टीकों के बीच 15 से 20 दिन का अंतर जरूर रखें। नवजात शिशु को कोलस्ट्रम अवश्य दें। सभी पशुओं के पेट के कीड़े मारने की दवा दें। स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए पशुओं, स्वयं तथा दूध के बर्तनों आदि की सफाई का ध्यान रखें | **मुर्गी:-** पेट में कीड़े मारने के लिए दवा दें। मुर्गी पालन में घंटे रोशनी दें। ध्यान रखें कि पोल्ट्री में प्रति 16 से 14 बिछाने की दिनचर्या को नियमित रूप से उलटें। चिकन को ठंड .वर्ग मीटर जगह उपलब्ध होनी चाहिए 3 मुर्गी के मौसम से बचाने के लिए पर्याप्त गर्मी का प्रबंधन करें|

फसल	फसल अवस्था	I) नोडल अधिकारी वाराणसी :- जिले वाराणसी, आजमगढ़, गाजीपुर, चंदौली , सोनभद्र, मिर्जापुर, संतरविदासनगर, मऊ व जौनपुर |
रबी फसल	सामान्य	**सरसों (फूल आना):-** सरसों की फसल में दूसरी सिंचाई बुआई के 55-65 दिन बाद फूल आने से पहले करनी चाहिए। आसमान में लगातार बादल छाए रहने के कारण सरसों की फसल में माहू कीट लगने की संभावना बढ़ जाती है, अत: इसकी रोकथाम के लिए क्लोरपाइरीफॉस 20% ईसी का प्रयोग करें। 1.0 लीटर/हेक्टेयर या मोनोक्रोटोफॉस 36% एस.एल. 500 मि.ली./हेक्टेयर 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। **गेहूं (टिलरिंग):-** गेहूं की फसल में, दूसरी सिंचाई बुआई के 40-45 दिन बाद टिलरिंग अवस्था में और तीसरी सिंचाई गांठ बनने की अवस्था पर करनी चाहिए 60- बुआई के 65 दिन बाद. हल्की सिंचाई एवं नाइट्रोजन अवश्य करें। जई आने पर दूसरी सिंचाई के बाद एक तिहाई मात्रा की टॉपड्रेसिंग करें। यदि गेहूं की फसल में संकरी और चौड़ी पत्ती वाले दोनों तरह के खरपतवार दिखाई दें तो पहली सिंचाई के बाद उचित नमी होने पर सल्फोसल्फ्यूरान 75% WP 33 ग्राम/हेक्टेयर की दर से या मैट्रीब्यूगिन 70% WP 250 ग्राम/हेक्टेयर की दर से डालें। 500-600 की दर से. लीटर में घोल बनाकर छिड़काव करें।
गन्ना	सामान्य	मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, आने वाले दिनों में बादल छाए रहने की संभावना है और तापमान में धीरे-धीरे गिरावट आएगी। हवा की गति सामान्य से अधिक रहेगी. रोपण से पहले बीज सेट को अनुशंसित कवकनाशी/कीटनाशकों से उपचारित किया जाना चाहिए।
सब्जी	सामान्य	**आलू:-** वर्तमान कोहरे के कारण आलू की फसल में पिछेती झुलसा रोग का प्रकोप होने की संभावना है, अतइसकी : ग्राम प्रति एकड़ या 700-500 एंट्राकोल/कवच /45-एम-दिन बाद इंडोफिल 30-25 रोकथाम के लिए बुआई के ब्लिटॉक्स का छिड़काव करें।@ग्राम प्रति एकड़ 1000-750, लीटर पानी में प्रति एकड़ साप्ताहिक 350-250 बार। 3-2 अंतराल पर **फूलगोभी :-** खड़ी फसल में निराई-गुड़ाई करें। कीट-पतंगों और बीमारियों की निगरानी करें और इसके लक्षण दिखाई दें और ईटीएल के पास जाएं, फिर अनुशंसित नियंत्रण उपाय लागू करें। **लहसुन:-** मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले दिनों में शुष्क मौसम बना रह सकता है तथा आसमान साफ रहेगा। वहीं न्यूनतम और अधिकतम तापमान में धीरे-धीरे गिरावट आएगी। हवा की गति सामान्य रहेगी. मिट्टी और लौंग जनित रोगों को नियंत्रित करने के लिए लौंग को अनुशंसित कीटनाशक से उपचारित करने के बाद रोपण करें। **उद्यान मटर:-** मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आने वाले दिनों में ठंडे दिन रहने की संभावना है। न्यूनतम और अधिकतम तापमान में हल्की गिरावट हो सकती है और हवा में नमी बनी रहने की संभावना है। थोड़ी देर में कोहरा भी रह सकता है इसलिए खड़ी फसल में निराई-गुड़ाई करें।
भैंस/ गाय	सामान्य	**गाय/भैंस :-** पशुओं को छाया व सूखे स्थान पर रखें। पशुओं को पर्याप्त मात्रा में अनाज के साथ हरा व सूखा चारा दें। पशुओं को दिन में 3-4 बार साफ पानी पिलाना चाहिए । टीकाकरण कार्यक्रम के अनुसार कराएं। चराई/भोजन सुबह/शाम के समय किया जा सकता है। दोपहर के समय पशुओं को छांव/छाया में रखें और पीने के लिए भरपूर पानी दें ।

****

*अगला बुलेटिन 30.01.2024 को जारी किया जाएगा।

For More Updates	
www	https://mausam.imd.gov.in/lucknow/
Twitter	@CentreLucknow
Facebook	https://www.facebook.com/mclucknow

मूँग की उन्नतशील खेती

मूँग जायद की प्रमुख फसल है। दलहनी फसलों में मूँग की बहुमुखी भूमिका है। इससे पौष्टिक तत्व प्रोटीन प्राप्त होने के अलावा फली तोड़ने के बाद फसलों को भूमि में पलट देने से यह हरी खाद की पूर्ति भी करता है। प्रदेश के एटा अलीगढ़, देवरिया, इटावा, फर्रूखाबाद, मथुरा, ललितपुर, कानपुर देहात, हरदोई एवं गाजीपुर जनपद प्रमुख मूँग उत्पादन के रूप में उभरे हैं। अन्य जनपदों में भी इसकी संभावनायें है। निम्न बातों पर ध्यान देकर जायद में इसकी अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है-

खेत की तैयारी :

मूँग की खेती के लिए दोमट भूमि उपयुक्त रहती है। पलेवा करके दो जुताई करने से खेत तैयार हो जाता है। यदि नमी की कमी हो तो दोबारा पलेवा करके बुआई की जाए। ट्रैक्टर, पावर टिलर रोटोवेटर या अन्य आधुनिक कृषि यंत्र से खेत की तैयारी शीघ्रता से की जा सकती है।

संस्तुत प्रजातियाँ :

अच्छी उपज लेने के लिए कम समय में पककर तैयार होने वाली निम्न प्रजातियां उपयुक्त रहती है-

	प्रजाति	अधिसूचना वर्ष	विशेषता	पकने की अवधि (दिन)	उपज कुन्तल प्रति हेक्टेयर	कीट रोग ग्राहिता उपयोगिता	उपयुक्त क्षेत्र
	1	2	3	4	5	6	7
1.	नरेन्द्र मूँग-1	1992	दाना धूमिल	65-70	11-13	पीला मौजेक	सम्पूर्ण उ.प्र.
2.	मालवीय जाग्रति (एच.यू.एम-2)	2000	हरा दाना	65-70	12-15	सहिष्णु, तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
3.	सम्राट पी.डी.एम-139)	2001	हरा चमकीला	60-65	9-10 अवरोधी	पीला मौजेक	सम्पूर्ण उ.प्र.
4.	मालवीय जनप्रिया (एच.यू.एम.-6)	2001	-	60-65	12-15	तदैव	सम्पूर्ण उ. प्र.
5.	आजाद मूँग-1 (के. एम.- 2342)	2020	चमकदार हरे रंग का मध्यम बोल्ड दाना	62-65	10-12	एम.वाई.एम.वी., सी.एल.एस., एन्थ्रक्नोस, लीफ क्रिन्कल एवं वेब ब्लाइट अवरोधी एवं ह्वाइट फ्लाई, जैसिड एवं थ्रिप्स अवरोधी।	सम्पूर्ण उ. प्र.
6.	आई.पी.एम. 312-20	2020	हरे एवं मध्यम बड़े दाने	65-85	6-7	एम.वाई.एम.वी., पउडरी मिल्ड्यू, सर्कोस्पोरा लीफ स्पाट के प्रति अवरोधी एवं सफेद मक्खी एवं थ्रिप्स के प्रति अवरोधी।	सम्पूर्ण उ. प्र.

	1	2	3	4	5	6	7
7.	आई.पी.एम.-409-4 (हीरा)	2020	हरे एवं मध्यम बड़े दाने	65-80	6-7	एम.वाई.एम.वी., सर्कोस्पोरा लीफ स्पाट के प्रति उच्च अवरोधी, लीफ क्रिन्कल एवं लीफ कर्ल रोग के प्रति अवरोधी, थ्रिप्स के प्रति अवरोधी।	सम्पूर्ण उ. प्र.
8.	मेहा (आई.पी.एम.-99-125)	2005	-	60-65	12-15	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
9.	पूसा विशाल	2001	बड़ा चमकीला	60-65	12-14	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
10.	एच.यू.एम.-16 (मालवीय जनकल्याणी)	2006	-	55-60	11-12	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
11.	मालवीय ज्योति (एच.यू.एम.-1)	1999	-	65-70	14-16	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
12.	टी.एम.वी.-37 टी.बी.एम.-37 (टी.एम.-99.37)	2005	-	60-65	12-14	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
13.	मालवीय जन चेतना (एच.यू.एम-12)	2003	-	60-62	12-14	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
14.	आई.पी.एम-2-3	2009	-	65-70	10.0	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
15.	आई.पी.एम-2-14	2011	-	62-65	10-11	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
16.	के.एम.-2241 (स्वेता)	2009	-	60-62	12-14	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
17.	के.एम.-2195 (स्वाती)	2012	-	65-70	8-10	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
18.	आई.पी.एम.-205-7 (विराट)	2016	-	52-55	10-12	अवरोधी पीला मोजेक, पाउडरी मिल्ड्यू	सम्पूर्ण उ.प्र.
19.	आई.पी.एम.-410-3 (शिखा)	2016	-	60-70	11-12	पीला मोजेक, पाउडरी मिल्ड्यू उच्च अवरोधी	सम्पूर्ण उ.प्र.
20.	कनिका (आई.पी.एम.-302-2)	2018	-	65-72	9-10	पीला मोजैक, सर्कोस्पोरा स्पॉट उच्च अवरोधी	सम्पूर्ण उ.प्र लीफ

	1	2	3	4	5	6	7
21.	वर्षा (आई.पी.एम.-2के-14-9)	2018	-	56-80	5-6	पाउडरी मिल्ड्यू, पीला मोजैक उच्च अवरोधी	सम्पूर्ण उ.प
22.	हीरा (आई.पी.एम.-409-4)	2020	-	60-70	10-11	पीला मोजैक उच्च अवरोधी	सम्पूर्ण उ.प
23.	वसुधा (आई.पी.एम.-312-20)	2020	-	65-75	10-11	तदैव	सम्पूर्ण उ.प्र.
24.	सूर्या (आई.पी.एम.-512-1)	2020	-	62-80 (मध्यम आकार का चमकीला दाना)	13-14	तदैव	पूर्वी उ.प्र.

बुवाई का समय :

मूँग की बुआई के लिए उपयुक्त समय 10 मार्च से 10 अप्रैल तक है। बुआई में देर करने से फल एवं फलियां गर्म हवा के कारण तथा वर्षा होने से क्षतिग्रस्त हो सकती है। तराई क्षेत्र में मूँग की बुआई मार्च के अन्दर कर लेनी चाहिए। अप्रैल माह में शीघ्र पकने वाली प्रजातियां ही बोई जाये। बसंत कालीन प्रजातियों की बुआई 15 फरवरी से 15 मार्च तक तथा ग्रीष्म कालीन प्रजातियों के लिए 10 मार्च से 10 अप्रैल का समय उपयुक्त होता है। जहाँ बुआई अप्रैल के प्रथम सप्ताह के आसपास हो वहाँ प्रजाति सम्राट एवं एच.यू.एम.-16 की बुआई की जाय।

बीज दर :

20-25 किग्रा. स्वस्थ बीज प्रति हे. पर्याप्त होता है।

बीज शोधन :

2.5 ग्राम थीरम अथवा 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. या ट्राइकोडर्मा विरिडी 1 प्रतिशत 4 ग्राम डब्लू.पी. प्रति किग्रा. बीज की दर से शोधन करें। इससे जमाव अच्छा हो जाता है, फलस्वरूप प्रति इकाई पौधों की संख्या सुनिश्चित हो जाती है और उपज में वृद्धि हो जाती है।

बीज उपचार :

बीज शोधन करने के पश्चात् बीजों को एक बोरे पर फैलाकर, मूँग के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें जिसकी विधि निम्न प्रकार है :-

आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ एवं 200 ग्राम राइजोबियम कल्चर का पूरा पैकेट मिला दें इस मिश्रण को 10 किग्रा. बीज के ऊपर छिड़क कर हल्के हाथ से मिलायें जिससे बीज के ऊपर एक हल्की पर्त बन जाती है। इस बीज को छाये में 1-2 घन्टे सुखाकर बुआई प्रातः 9 बजे तक या सायंकाल 4 बजे के बाद करें। तेज धूप में कल्चर के जीवाणुओं के मरने की आशंका रहती है। ऐसे खेतों में जहाँ मूँग की खेती पहली बार अथवा काफी समय के बाद की जा रही हो, वहाँ कल्चर का प्रयोग अवश्य करें।

पी.एस.बी. :

दलहनी फसलों के लिए फास्फेट पोषक तत्व अत्यधिक महत्वपूर्ण है। रासायनिक उर्वरकों से दिये जाने वाले फास्फेट पोषक तत्व का काफी भाग भूमि में अनुपलब्ध अवस्था में परिवर्तित हो जाता है। फलस्वरूप फास्फेट की उपलब्धता में कमी के कारण इन फसलों की पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। भूमि में अनुपलब्ध फास्फेट को उपलब्ध दशा में परिवर्तित करने में फास्फेट सालूब्लाईजिंग बैक्टिरिया (पी.एस.बी.) का कल्चर बहुत ही सहायक होता है। इसलिए

क्र.सं.	प्रजाति	अधिसूचना का वर्ष	उत्पादन क्षमता (कु./हे.)	पकने की अवधि	उपयुक्त क्षेत्र	विशेषताएं
16.	बी.जी.–3043	2018	20–22	135–140	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	देशी प्रजाति, मध्यम आकार।
17.	जी.एन.जी. 2171	2017	20.14	163	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	देशी प्रजाति, पीला दाना, फ्यूजेरियम विल्ट (मीरा)सहिष्णु।
18.	पन्त ग्राम 5	2017	20–22	125–130	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	भूरा दाना, फ्यूजेरियम विल्ट सहिष्णु।
19.	सी.एस.जे. 515 (अमन)	2016	24	135	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	छोटा भूरा दाना, सूखा जड़ सड़न, विल्ट, कालर रॉट मध्यम अवरोधी, एस्कोचाइटा ब्लाइट एवं बी.जी.एम. सहिष्णु।
20.	आई.पी.सी.–2004–98	2020	20–22	130–135	सम्पूर्ण उ.प्र.	उकठा अवरोधी।
21.	जाकी–9218	2008	18–20	93–125	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	हल्का पीला एवं क्रीम रंगा का बड़ा दाना विल्ट, रूट रॉट एवं कालर रॉट अवरोधी।
ब.	**देर से बुवाईः**					
1.	पूसा–372	1993	25–30	130–140	सम्पूर्ण उ. प्र.	उकठा, ब्लाइट एवं जड़ गलन। के प्रति सहिष्णु।
2.	उदय	1992	20–25	130–140	सम्पूर्ण उ. प्र. उकठा सहिष्णु	दाने का रंग भूरा, मध्यम ऊँचाई।
3.	पन्त जी.–186	1996	20–25	120–130	सम्पूर्ण उ. प्र.	पौधे मध्यम ऊँचाई, उकठा सहिष्णु।
4.	आई.पी.सी.–2006–77	2019	20–25	115–120	बुन्देलखण्ड के लिए	उकठा रोग रोधी, दाना मध्यम आकार का।
5.	जी.एन.जी. 2207(अवध)	2018	20–22	135–140	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	–
6.	जी.एन.जी. 2144 (तीज)	2016	22.8	133	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	देशी प्रजाति, मध्यम आकार एवं फ्यूजेरियम विल्ट सहिष्ण।
7.	राज विजय चना–202	2015	20	102	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	ड्राई रूट राट एवं कालर (आर.वी.जी.–202)राट मध्यम अवरोधी।
8.	राज विजय चना–203 (आर.वी.जी.–203)	2012	19	100	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	विल्ट एवं ड्राई रूट रॉट अवरोधी।
9.	जे.जी.–14	2009	20–25	113	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	विल्ट, ड्राई रूट रॉट एवं पॉड बोरर मध्यम अवरोधी।
10.	आई.पी.सी.–2005–62	2020	20–22	120	सम्पूर्ण उ.प्र.	उकठा अवरोधी, अधिक प्रोटीन।
स.	**काबुली :**					
1.	पूसा–1003	1999	20–22	135–145	पूर्वी उ. प्र.	दाना मध्यम बड़ा उकठा सहिष्णु।
2.	एच.के.–94–134	2005	25–30	140–145	सम्पूर्ण उ. प्र.	दाना बड़ा उकठा, सहिष्णु।
3.	चमत्कार (वी.जी.–1053)	2000	15–16	135–145	पश्चिमी उ. प्र.	बड़ा दाना।
4.	जे.जी.के.–1	–	17–18	110–115	बुन्देलखण्ड क्षेत्र, उ. प्र.	बड़ा दाना, उकठा सहिष्णु।
5.	शुभ्रा (आई.पी.सी.के.–2002–29)	2009	18–20	125	बुन्देलखण्ड के लिए	उकठा अवरोधी।
6.	उज्जवल (आई.पी.सी.के.–2004–29)	2009	18–20	125	बुन्देलखण्ड के लिए	उकठा अवरोधी।
7.	जी.एन.जी.–1985	2013		26.8	सिंचित दशा में	विल्ट, रॉट, स्टंट एवं मौलर रॉट के प्रति अवरोधी।
8.	पूसा 3022 (बी.जी.–3022)	2016	16–18	130–150	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	ड्राई रॉट, ब्लाइट स्टंट के प्रति मध्यम अवरोधी।
9.	वल्लभ काबुली चना–1	2015	20–25	147	सिंचित दशा में	सिल्ट के प्रति मध्यम अवरोधी।
10.	जी.एन.जी. 1969 (के.)	2013	22	146	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	क्रीमी बैंगनी रंगा का दाना।
11.	जी.एल.के. 28127	2013	21	149	उ.प्र. मैदानी क्षेत्र	हल्का पीला एवं क्रीम रंगा का बड़ा दाना विल्ट, रूट रॉट एवं कालर रॉट अवरोधी।

गाय व भैंसों में ऋतुकाल के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित है –

1. पशु के चरने तथा खाने के स्वभाव में अन्तर आ जाता है।
2. पशु जुगाली करना बन्द कर देता है।
3. दुग्ध उत्पादन घट जाता है।
4. गाय दूसरी गाय पर चढ़ती है या अन्य गायों के चढ़ने पर शान्त खड़ी रहती है।
5. पशु बार–बार थोड़ी–थोड़ी मात्रा में मूत्र त्याग करता है।
6. ऋतुमयी मादा अन्य पशुओं को चाटती है।
7. पशु की भग शोफयुक्त तथा उपकला सुर्ख हो जाती है।
8. भग से स्वच्छ पानी जैसा श्लेष्मिक स्राव लटकता दिखाई देता है।

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी मुख्य बातें संक्षिप्त रूप से नीचे दी गयी हैं उन पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए –

1. गर्भित पशुओं को दौड़ाना नहीं चाहिए और हो सके तो अन्य पशुओं से अलग रखें जिससे गर्भपात जैसी घटना न हो।
2. गर्भधारण की तिथि व पशु के गर्भकाल द्वारा प्रसव की संभावित तिथि का अनुमान लगाया जा सकता है।
3. गर्भावस्था की अन्तिम अवधि में पशु के पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
4. समय–समय पर विभिन्न प्रकार की संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए टीके लगवाने चाहिए।
5. पशुओं को लवण मिश्रण संतुलित मात्रा में मिलना चाहिए।

इस प्रकार से उपर्युक्त जानकारी को ध्यान में रखते हुए एक पशुपालक अपने पशुओं से अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकता है।

पशु स्वास्थ्य–चारा

मवेशियों के लिए हरे चारे वाले संतुलित आहार

पशु का विवरण		आहार	
1.	363 किग्रा. वजन वाली ऐसी गाय के लिए जो न दूध देती है न गाभिन है।	1.	हरी चरी या एम0पी0 चरी या हरी जई या हरी मक्का 23 किलो ग्राम, मूँगफली की खली 110 ग्राम। या
		2.	हरी लोबिया, हरी बरसीम या हरी लूसर्न 12 किलो, भूसा 4.5 किग्रा. ग्राम। या
		3.	जई या अंजना घास की 'हे' 8 किलो।
2.	363 किग्रा. वजन वाली ऐसी गाय जो प्रति दिन करीब 8 किग्रा. दूध देती है।	1.	हरी चरी या एम0पी0 चरी या हरी मक्का 25 किग्रा. जौ, चना खली, चोकर का मिश्रण 2.5 किग्रा0। या
		2.	हरी लोबिया या हरी बरसीम या हरी लूसर्न 12 किग्रा. भूसा 4.5 किग्रा. जौ, चना, खली, चोकर का मिश्रण 2 .5 किग्रा0।
		3.	जई की 'हे' या अंजन की 'हे' 7.25 किग्रा. जौ0 चना, खली व चोकर का मिश्रण 3 किग्रा0।

बछड़े–बछियों के लिए आहार

पशु का विवरण		आहार	
1.	ऐसे बछड़े या बछिया के लिए जिनका वजन 182 किग्रा. के लगभग है।	1.	हरी बरसीम 9 किग्रा ., भूसा 2 .25 किग्रा ., दाना, खली, चोकर का मिश्रण 1.33 किग्रा.। या
		2.	जई की 'हे' या अंजन की ' हे' 3.5 किग्रा. दाना, खली, चोकर का मिश्रण 1.33 किग्रा0।

गर्भावस्था के लिए अतिरिक्त आहार :

अधिक मात्रा में दूध देने वाली गाय भैसों के उनकी गर्भावस्था के अंतिम दो–तीन मास में जबकि वह दूध न दे रही हों, तब भी अगले व्यांत में उनसे पूरी मात्रा में दूध लेने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि उनकी खिलाई–पिलाई की तरफ खासतौर से ध्यान दिया जाय। जीवन निर्वाह के भोजन के अतरिक्त गाय को 2 से 2.5 किग्रा. तथा भैंस को 4.33 किग्रा. तक दाने व खली चोकर का मिश्रण दूध की उत्पादन शक्ति के अनुसार देना चाहिए।

बैलों के लिए आहार

पशु का विवरण		आहार
363 किग्रा. वजन वाले बैल के लिए मध्यम रूप से जुताई, ढुलाई, पानी की सिंचाई इत्यादि का काम लेने के लिए।	1.	हरी ज्वार या मकचरी या एम0पी0 चरी की कुट्टी 23 किलो भूसा, 2 .5 किग्रा. दानें, खली चोकर का मिश्रण 1 किलो या
	2.	हरी बरसीम या लूसर्न 18 किग्रा. भूसा 4.5 किग्रा. ग्राम।

अगर दाने के मिश्रण में खनिज लवण का मिश्रण सम्मिलित न हो तो उपरोक्त प्रत्येक राशन में लगभग 3 ग्राम खड़िया मिट्टी में मिलाकर खिलाना चाहिए।

दाने, खली, चोकर के मिश्रण :

1.	मूँगफली की खली	25	भाग प्रतिशत
	चना की खली	20	" "
	जौ की खली	15	" "
	गेहूँ की चोकर	40	" "
2.	सरसों की खली	40	" "
	जौ की खली	40	" "
	गेहूँ का चोकर	20	" "
3.	बिनौला	35	" "
	सरसों या दुआं की खली	25	" "
	जौ	20	" "
4.	बिनौले की खली	35	" "
	ग्वार	15	" "
	चने की चूनी	20	" "
	गेहूँ का चोकर	20	" "

ऊपर लिखे हुए मिश्रण के प्रत्येक 100 किग्रा. में खड़िया मिट्टी 3 किग्रा. के हिसाब से मिला देना चाहिए।

जनपदवार लक्ष्य संलग्नक-09 पर दर्शाये गए हैं।

30: <u>नेशनल मिशन ऑन एडिबिल ऑयल (ऑयलसीड्स/टी0बी0ओ0) वर्ष 2023-24:-</u>

<u>योजना का नाम-</u> नेशनल मिशन ऑन एडिबिल ऑयल (ऑयलसीड्स/टी0बी0ओ0)

<u>योजना का संचालन-</u> प्रदेश की तिलहन संबन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं तिलहनी फसलों के क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हेतु केन्द्र पुरोनिधानित नेशनल मिशन ऑन आयलसीड्स एण्ड आयलपाम (एन0एम0ओ0ओ0पी0) योजना वर्ष 2014-15 से क्रियान्वित की जा रही थी, जो कि वर्ष 2018-19 से नेशनल फूड सिक्योरिटी मिशन (ऑयलसीड्स/टी0बी0ओ0) के नाम से क्रियान्वित की जा रही थी तथा वर्ष 2022-23 से उक्त योजना नेशनल मिशन ऑन एडिबिल ऑयल (ऑयलसीड्स/टी0बी0ओ0) के नाम से क्रियान्वित की जा रही है। योजनान्तर्गत तिलहन कार्यक्रम एवं वृक्षजनित तेल कार्यक्रम का विवरण निम्नवत् है:-

<u>तिलहन कार्यक्रमः-</u>

- प्रदेश में तिलहनी फसलों के क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि।
- एग्रो क्लाइमेटिक जोन के आधार पर तिलहनी फसलों का क्षेत्र विस्तार।
- प्रदेश की मांग के अनुरुप खाद्य तेलों की आवश्यकता की पूर्ति करना।
- लघु एवं सीमान्त/अनुसूचित जाति/अनु0 जनजाति/महिला कृषकों को इन फसलों के माध्यम से अधिक आय दिलाना।
- तिलहनी फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने हेतु कृषकों को विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से सहायता उपलब्ध कराना।

<u>कार्यक्षेत्रः- प्रदेश के समस्त 75 जनपद</u>

<u>वृक्षजनित तेल कार्यक्रमः-</u>

- बंजर भूमि, परती एंव अन्य अनुपयोगी भूमि का उपयोग कर तेलजनित वृक्षों यथा नीम व महुआ के वृक्षारोपण के माध्यम से तेल उत्पादन में वृद्धि करना।

  कार्यक्षेत्रः- झांसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट (बुन्देलखण्ड क्षेत्र के 7 जनपद)।
  - फन्डिंग पैटर्नः- 60 प्रतिशत केन्द्रांश एवं 40 प्रतिशत राज्यांश।
  - **(अ)-नेशनल मिशन ऑन एडिबिल ऑयल (ऑयलसीड्स) योजना वर्ष 2023-24 योजना के अन्तर्गत <u>विभिन्न कार्यक्रमों हेतु कृषकों को दी जाने वाली सुविधाएः-</u>**

क्र.सं0	कार्यमद	अनुदान की दर/देय सहायता	
1	प्रमाणित बीज वितरण	15 वर्षों में अधिसूचित समस्त प्रजातियों पर मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम रू0 4,000/- प्रति कु0 जो भी कम हो तथा 10 वर्षों तक की अधिसूचित संकर प्रजातियों तथा तिल के प्रमाणित बीज पर मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम रू0 8,000/- प्रति कु0 जो कम हो।	
2	फसल प्रदर्शन	**फसल**	**अनुमन्य अनुदान दर**
		तिल	रू0 3,000 प्रति हे0 (कैफेटेरया के अनुसार)
		मूंगफली	रू0 10,000 प्रति हे0 (कैफेटेरया के अनुसार)
		सोयाबीन	रू0 6,000 प्रति हे0 (कैफेटेरया के अनुसार)
		राई/सरसों	रू0 3,000 प्रति हे0 (कैफेटेरया के अनुसार)
		राई/सरसों विद 'बी-कीपिंग	रू0 5,000 प्रति हे0 (कैफेटेरया के अनुसार)
		अलसी	रू0 3,000 प्रति हे0 (कैफेटेरया के अनुसार)

		सूरजमूखी	रू0 4,000 प्रति हे0 (कैफेटेरया के अनुसार)
3	जी0आई0 बखारी वितरण	1 से 10 कुन्तल तक की क्षमता वाली बखारी हेतु समान जाति के कृषकों को मूल्य का 25 प्रतिशत अथवा अधिकतम रू0 1,000/-, जो भी कम हो, अनुसूचित जाति/जनजाति के कृषकों को(बीज ग्राम योजना में अनुमन्य दर के अनुसार) 01 से 10 कुन्तल तक की क्षमता वाली बखारी हेतु मूल्य का 33 प्रतिशत अथवा अधिकतम रू0 1500/-, जो भी कम हो का अनुदान अनुमन्य होगा।	
4	आई0पी0एम0 प्रदर्शन	आई0पी0एम0 प्रदर्शन अर्न्तगत फार्मर्स फील्ड स्कूल एवं आई0पी0एम0 प्रदर्शन/प्रशिक्षण हेतु कुल रू0 26,700 का अनुदान अनुमन्य है।	
5	कृषक प्रशिक्षण/गोष्ठी	इस मद में रू0 24,000/-(रू0 चौबिस हजार मात्र) प्रति प्रशिक्षण 30 कृषकों के 02 दिवसीय बैच हेतु अनुमन्य है।	
6	प्रसार अधिकारी प्रशिक्षण	इस मद में रू0 36,000/-(रू0 छत्तीस हजार मात्र) प्रति दो दिवसीय प्रशिक्षण में 20 अधिकारियों के बैच हेतु अनुमन्य है।	
7	जिप्सम, सिंगल सुपर फास्फेट एवं सल्फर आदि का वितरण	मूल्य का 50 प्रतिशत या अधिकतम रू0 500 प्रति हे0 जो भी कम हो की दर से अनुदान अनुमन्य है।	
8	राईजोबियम कल्चर/पी0एस0 बी0/जेड.एस.बी./माइकोराइजा वितरण/बायोफर्टीलाइजर	मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा रू0 300 प्रति हे0 जो भी कम हो की दर से कृषकों को अनुदान अनुमन्य है।	
9	कृषि रक्षा रसायन/ इन्सेक्टिसाइड्स/सूक्ष्मतत्व/ तृणनाशी	मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा रू0 500 प्रति हे0 जो भी कम हो की दर से कृषकों को अनुदान अनुमन्य है।	
10	कृषि रक्षा उपकरण	कृषि रक्षा उपकरण	अनुदान की दर/देय सहायता
		मानव चालित नैपसेक/फूट स्प्रेयर	सामान्य जाति के कृषकों हेतु मूल्य का 40 प्रतिशत अथवा अधिकतम रू0 600 प्रति उपकरण, जो भी कम हो तथा अनु0/ जनजाति/लघु एवं सीमान्त कृषकों को मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम रूपये 750/-प्रति उपकरण जो भी कम हो।
		शक्ति चालित पावर स्प्रेयर (आई0एस0आई0 मार्क)	सामान्य जाति के कृषकों हेतु मूल्य का 40 प्रतिशत अथवा अधिकतम रू0 3000/- प्रति उपकरण जो भी कम हो तथा अनु0/ जनजाति/लघु एवं सीमान्त कृषकों को मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम रूपये 3800/-प्रति उपकरण, जो भी कम हो।
11	कृषि यंत्र क- पावर टिलर	सामान्य जाति हेतु रू0 70,000/- या मूल्य का 40 प्रतिशत, अनु0/जनजाति/लघु एवं सीमान्त/महिला कृषकों को रू0 85,000/- या मूल्य का 50 प्रतिशत जो भी कम हो।	
	ख- कल्टीवेटर	सामान्य जाति हेतु रू0 25,000/- या मूल्य का 40 प्रतिशत, अनु0/जनजाति/लघु एवं सीमान्त/महिला कृषकों को रू0 30,000/- या मूल्य का 50 प्रतिशत जो भी कम हो।	

	ग- सीड कम फर्टीड्रिल /सीडड्रिल	सामान्य जाति हेतु रू0 16,000/- या मूल्य का 40 प्रतिशत, अनु0/जनजाति/लघु एवं सीमान्त/महिला कृषकों को रू0 20,000/- या मूल्य का 50 प्रतिशत जो भी कम हो।
	घ- मल्टीक्राप थ्रेसर	सामान्य जाति हेतु रू0 30,000/- या मूल्य का 40 प्रतिशत, अनु0/जनजाति/लघु एवं सीमान्त/महिला कृषकों को रू0 40,000/- या मूल्य का 50 प्रतिशत जो भी कम हो।
	ङ- रोटावेटर	सामान्य जाति हेतु रू0 34,000/- या मूल्य का 40 प्रतिशत, अनु0/जनजाति/लघु एवं सीमान्त/महिला कृषकों को रू0 42000/- या मूल्य का 50 प्रतिशत जो भी कम हो।
12	स्माल ऑयल एक्स्ट्रेक्शन यूनिट	मूल्य का 50 प्रतिशत अधिकतम रू0 60,000 प्रति यूनिट की दर से अनुदान अनुमन्य होगा।
13	सिंचाई जल को स्रोत से खेत तक ले जाने हेतु पाइप का वितरण	मूल्य का 50 प्रतिशत अथवा रू0 50 प्रति मीटर की दर से एच0डी0पी0ई0 पाइप, रू0 35/- प्रति मीटर की दर से पी0वी0सी0 पाइप तथा रू0 20/- प्रति मीटर की दर से एच0डी0पी0ई0 लेमिनेटेड फ्लैट ट्यूब पाइप पर अधिकतम रू0 15,000/-जो भी कम हो।
14	मण्डल स्तरीय तिलहन मेला	रू0 1,00,000/- प्रति मेला
15	जनपद स्तरीय तिलहन मेला	रू0 50,000/- प्रति मेला

➢ **वृक्ष जनित तेल कार्यक्रम(टी0बी0ओ0) वर्ष 2023-24 के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों हेतु कृषकों को दी जाने वाली सुविधायें**

क्र0सं0	कार्यमद	अनुमन्य अनुदान
1	बंजर, परती एवं अनुपयोगी भूमि पर नर्सरी एवं पौधरोपण	नीम हेतु रू0 17,000 प्रति हे0 एवं महुआ हेतु रू0 15,000 प्रति हे0 अनुदान अनुमन्य है।
2	पौधों के रख रखाव पर व्यय	नीम हेतु रू0 2,000 प्रति हे0 (05 वर्ष) एवं महुआ हेतु रू0 2,000 प्रति हे0 (08 वर्ष) हेतु अनुमन्य।
3	कृषक प्रशिक्षण	इस मद में रू0 24000/-(रू0 चौबीस हजार मात्र) प्रति दो दिवसीय प्रशिक्षण में 30 कृषकों के बैच हेतु अनुदान अनुमन्य है।
4	प्रसार अधिकारी प्रशिक्षण	इस मद में रू0 36,000/-(रू0 छत्तीस हजार मात्र) प्रति दो दिवसीय प्रशिक्षण में 20 अधिकारियों के बैच हेतु अनुदान अनुमन्य है।
5	स्माल ऑयल एक्सट्रेक्शन यूनिट	मूल्य का 50 प्रतिशत अधिकतम रू0 60,000/-प्रति यूनिट जो भी कम हो की दर से अनुदान अनुमन्य होगा ।

31. <u>पं0 दीनदयाल उपाध्याय किसान समृद्धि योजना</u>:-

प्रदेश में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं कृषि भूमि के अन्य उपयोग आने से जैसे- शहरीकरण, राष्ट्रीय राज मार्ग/एक्सप्रेस-वे तथा औद्योगिकीकरण/डिफन्स कोरिडोर के निर्माण के कारण कृषि योग्य भूमि निरन्तर घटती जा रही है, जिससे भविष्य में खाद्यान्न की समस्या एवं कृषि विकास दर में कमी आ सकती है। इस कारण प्रदेश का यह दायित्व हो जाता है कि प्रदेश में नदी एवं नालों के किनारे बीहड़ एवं बंजर भूमि को जिसमें अधिकांशतः भूमिहीन कृषकों को पट्टे दिए गए हैं तथा जहाँ पर जल-भराव होता है, उन भूमि को सुधार कर कृषि योग्य बनाया जाए। प्रदेश में कृषि विकास दर बढ़ाने हेतु तथा कृषकों/कृषि मजदूरों की उन्नति के लिए उनको आजीविका/रोजगार उपलब्ध कराने हेतु पं0 दीनदयाल उपाध्याय किसान समृद्धि योजना शासन द्वारा वर्ष 2022-2023 से 2026-27 तक स्वीकृत की गई है। योजना का क्रियान्वयन प्रदेश के 74 जनपदों में (गौतमबुद्धनगर को छोड़कर) स्वीकृत है। योजनान्तर्गत चयनित

तिल :

बीज शोधन –

- बीज जनित रोगों से बचाव हेतु 2 ग्राम थीरम एवं 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किग्रा0 बीज की दर से शोधन हेतु प्रयोग करें।

खरपतवार नियंत्रण –

- प्रथम निराई–गुड़ाई बुआई के 15 दिन बाद एवं दूसरी निराई 30–35 दिन बाद करें निराई गुड़ाई करते समय पौधों की थिनिंग (विरलीकरण) करके उनकी आपस की दूरी 10–12 सेमी0 कर लें।
- एलाक्लोर 50 ई0सी0 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर बुआई के तीन दिन के अन्दर प्रयोग करने से खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है।

पत्ती व फल की सूड़ी –

- पत्ती व फल की सूड़ी एवं जैसिड रोकथाम के लिए डाइमेथोऐट 30 ई0सी0 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर अथवा क्यूनालफास 25 ई0सी0 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर अथवा मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई0सी0 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

फाइलोडी –

- फाइलोडी के लिए बुआई के समय कुड़ में फोरेट 10 जी 15 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से अथवा मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई0सी0 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

फाइटोफ्थोरा झुलसा –

- फाइटोफ्थोरा झुलसा की रोकथाम हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 किग्रा0 या मैनकोजेब 2.5 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।

(ख) खरीफ के मुख्य कीट/रोग प्रबन्धन

स्वस्थ फसलोत्पादन के मंत्र				
क्र. सं.	कीट/रोग	प्रभावित फसलें	उपचार	अन्तिम छिड़काव एवं फसल कटाई/तुड़ाई के बीच का अन्तराल (दिन)
कीट				
1	दीमक	उर्द, मूँग, मूँगफली, गन्ना, जायद की अन्य सब्जियाँ	• दीमक के अत्यधिक प्रकोप वाले क्षेत्रों में नीम की खली 10 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व खेत में मिलाने से दीमक के प्रकोप में धीरे–धीरे कमी आती है। • ब्यूवेरिया बैसियाना 1.15 प्रतिशत की 2.50 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर मात्रा को 60–70 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छीटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखारी जुताई पर भूमि में मिला देने से दीमक सहित भूमि जनित कीटों का नियंत्रण हो जाता है।	– –

स्वस्थ फसलोत्पादन के मंत्र				
क्र. सं.	कीट/रोग	प्रभावित फसलें	उपचार	अन्तिम छिड़काव एवं फसल कटाई/तुड़ाई के बीच का अन्तराल (दिन)
2	सफेद गिडार	मूँगफली, गन्ना आदि	• ब्यूवेरिया बैसियाना 1.15 प्रतिशत की 2.50 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर मात्रा को 60–70 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छीटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से दीमक सहित भूमि जनित कीटों का नियंत्रण हो जाता है।	–
3	लीफ माइनर	ग्रीष्मकालीन मक्का, मूँगफली।	• लीफ माइनर (पत्ती सुरंगक कीट) के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई0सी0 अथवा क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत ई0सी0 की 1 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 600–700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।	15–20
4	जैसिड	उर्द, मूँग, मूँगफली।	• एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 ली0 मात्रा को 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। • जैसिड कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 की 1 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करने का सुझाव दिया गया।	5 30–40
5	फली बेधक	उर्द, मूँग।	• एन0पी0वी0 (एच0) 2 प्रतिशत ए0एस0 250–300 मिली0 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें। • ट्राइकोग्रामा के 50000–60000 अण्डे प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। • क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0,2 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें।	5–10 40
6	तना बेधक एवं चोटी बेधक	गन्ना	• तना बेधक एवं चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु ट्राइकोग्रामा किलोनिस के 10 कार्ड प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर सॉयकाल प्रयोग करना चाहिए। • कार्बोफ्यूरान 3जी0 20 किग्रा0 अथवा कारटाप हाईड्रोक्लोराइड 4जी0 18–20 किग्रा0 मात्रा को 3–5 सेमी0 स्थिर पानी में बुरकाव अथवा क्लोरपाइरीफॉस 20 प्रतिशत ई0सी0 अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।	– 15–20
7	जड़ सड़न एवं ग्रीव सड़न (कॉलर राट)	मूँगफली	• मैनकोजेब 63 प्रतिशत + कार्बन्डाजिम 12 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 2.5 कि0ग्रा0 मात्रा को ड्रेंचिंग द्वारा प्रयोग करना चाहिए।	5–10

स्वस्थ फसलोत्पादन के मंत्र				
क्र. सं.	कीट/रोग	प्रभावित फसलें	उपचार	अन्तिम छिड़काव एवं फसल कटाई/तुड़ाई के बीच का अन्तराल (दिन)
8	तना एवं फल बेधक	बैगन एवं कद्दू वर्गीय सब्जियॉ।	• कीट के जैविक नियंत्रण हेतु 15–20 फैरोमैन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाकर भी कीटों की रोकथाम किया जा सकता है। • एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 ली0 मात्रा को 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। • मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 की 2 लीटर मात्रा को 400–500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव किया जाना चाहिए	– – 20–25
9	फल मक्खी	बैगन, कद्दू वर्गीय सब्जियॉ।	• मिथाइल यूजिनाल + इथाइल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5x5x1.5 मिमी0 प्लाईबुड के टुकड़ों को शोधित कर एक सप्ताह तक लगाने का सुझाव दिया गया। • 6–8 क्यू (Cue) ल्योर लगाने से फलमक्खी आकर्षित होती है जिसे एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिए। उक्त के अतिरिक्त कीट के प्रकोप की दशा में एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2 मिली0/लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।	10–15 –
10	लाल भृंग कीट	कद्दू वर्गीय सब्जियॉ।	• मैलाथियान 5 प्रतिशत की 20–25 किग्रा मात्रा का प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करने का सुझाव दिया गया।	15–20
11	मिली बग	आम	• क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 2 मिली0 अथवा डाईमेथोऐट 30 प्रतिशत 1.5 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।	30–40
12	भुनगा	आम	• एजाडिरेक्टिंन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 की 2 मिली/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। • इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत 0.35 मिली0 प्रति लीटर अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।	– 40

स्वस्थ फसलोत्पादन के मंत्र				
क्र. सं.	कीट/रोग	प्रभावित फसलें	उपचार	अन्तिम छिड़काव एवं फसल कटाई/तुड़ाई के बीच का अन्तराल (दिन)
			रोग	
13	पीला चितवर्ण	उर्द, मूँग, मूँगफली, भिण्डी।	• इस रोग का वाहक कीट सफेद मक्खी है। अतएव रोग के प्रसार को रोकने हेतु ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु डाइमेथोएट 30 प्रतिशत ई0सी0, 1 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर दो से तीन छिड़काव करने का सुझाव दिया गया।	10–12
14	चूर्णिल आसिता	भिण्डी, कद्दू वर्गीय सब्जियॉ।	• घुलनशील गंधक की 3.0 ग्राम मात्रा प्रति ली0 पानी अथवा कार्बेन्डाज़िम 50 प्रतिशत डब्लू0पी0 300 ग्राम मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।	10–15
15	खर्रा रोग	भिण्डी, कद्दू वर्गीय सब्जियॉ।	• हेक्साकोनाजोल 5 प्रतिशत 1 मिली0 अथवा डाइनोकेप 48 प्रतिशत ई0सी0 की 0.5 मिली0 मात्रा को प्रति ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।	30
16	उकठा रोग	मूँगफली, उर्द, मूँग।	• उक्ठा से बचाव हेतु फसल चक्र अपनाना चाहिए तथा 10 ग्राम ट्राईकोडर्मा 8–10 किग्रा0 गोबर की सड़ी खाद में मिलाकर पौध रोपड़ के समय प्रति पौध प्रयोग करना चाहिए।	–
17	टिक्का रोग	मूँगफली।	• मैन्कोजेब अथवा जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण की 2 किग्रा0 मात्रा को 500–600 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करना चाहिए।	5–6